हज़रत अकदस मुफती अहमद खानपुरी दब का

दर्द भरा पैगाम

ज़िल्हज १४४१ - २०२०

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

जिल्हज का महिना उमुमन और उसका अव्वल अशरह खुसुसन बहोत ही अहमियत का हामिल हे. अहादीसे मुबारकह मे उसकी बडी फज़ीलत वारीद हुइ हे. ये मुबारक अय्याम तकबीर व तहलील और हज व कुरबानी के दिन हे. उन में अल्लाह से लव लगाने की फिक्र करनी चाहिये.

कोविड-१९ के फेलने के सबब इस वकत आलमे इन्सानियत जिन हालात से दोचार हे, उस का सबब हमारी बदआमाली और अल्लाह के अहकामात और ज़िक्र से गफलत के सिवा और कया हे? लेकीन हम अभी ख्वाबे गफलत से बेदार होने के लिये तय्यार नहीं.

जिन घरानो या इलाको में ये वबा पहोंच चुकी हे, उन के अलावह दुसरे लोग अब भी अपनी मस्ती में

मस्त नजर आते हे. खास तोर से नवजवान नस्ल मोबाइल और इन्टरनेट पर बे मकसद बलके गुनाह के कामां में पहले की तरह लगी हुइ हे.
मस्जिदो के बंद होने पर होना तो ये चाहिये था के हम मजीद तवज्जूह के साथ अल्लाह तआला के हुजूर रो रो कर अपने गुनाहों की माफी मांगते, और अपने आमाल को दुरूस्त करने का एहतेमाम करते, लेकिन ताज्जुब हे के हमारे नवजवान नमाज़ों से मज़ीद गाफिल नजर आने लगे.
जब मस्जिद में बा जमाअत नमाज़ का इन्तेजाम था, तब जितने लोग नमाज़ों का एहतेमाम करते थे, अब उस में कमी आ गइ हे ! हम हालात का रोना तो रोते हे लेकिन हालात के दुरूस्त करने वाले अल्लाह को राज़ी करने का एहतेमाम नहीं करते.
कया अब भी वकत नहीं आया के हमारे कुलूब अल्लाह तआला की याद और उस के ज़िक्र की तरफ झुक जाए? इन हालात में तो अल्लाह को राज़ी करने, इस्तीग्फार ज्यदाह करने और हर किसम के गुनाहां

से सच्ची पककी तोबा करने का निहायत एहतेमाम करने की जरूरत हे.

अल्लाह तआला हमे उस की तौफीक अता फरमा कर आज़माइश के इस दोर को खैर व आफियत वाले दोर से बदल दे और हम सब के साथ फज़्ल व एहसान का मामला फरमाये. आमीन या मुजीबदाइन.

मेरी आप से गुज़ारिश हे के इन मुबारक अय्यम को बेकार जाने से बचाए और नीचे दिये हुए काम करने की पाबंदी फरमाए.

(१) नमाज़ों और तमाम फराइज़ व वाजिबात की पाबंदी करे.

(२) अल्लाह तआला से अपने ताल्लुक को मजबूत करे.

(३) हर किसम के गुनाहों से सचची पककी तोबा करे.

पेहले पूरी उम्मत की तरफ से 'नस्तग्फीरूल्लाह' पढने दरखास्त की गइ थी, अब उस के साथे 'व नतूबु इलयहि' का इज़ाफा फरमा ले. और पूरे ध्यान के साथ ज्यदाह से ज्यदाह दिन - रात के किसी भी हिस्से में इन अल्फाज़ का ज़िक्र करते रहे.
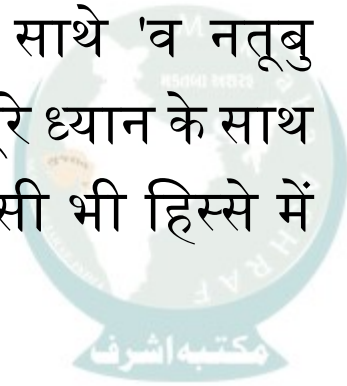
نَسْتَغْفِرُ اللهَ وَنَتُوْبُ اِلَيْهِ

"नस्तग्फीरूल्लाह व नतूबु इलयहि"

या अल्लाह ! हम सब आप से मगफिरत चाहते हे और आप के हुज़ूर तोबा करते हे.

(४) अल्लाह की अयाल यानी अल्लाह के बंदो के काम आये. खास तोर से जो लोग इस तकलीफदेह और जानलेवा बीमारी का शिकार हो, उन की और उन के घरवालों की जितनी हो सके मदद जरूर करे.

(५) लोकडाउन की वजह से परेशान दूसरे जरूरतमंदो का भी अपनी ताकत के मुताबिक तआवुन करते रहे.

जो काम हमारे ज़िम्मे हे, अगर हम ने उन पर बजा तोर पर अमल किया तो अल्लाह तआला की ज़ात से कवी उमीद हे के बहोत जल्द हालात बेहतर हो जाएंगे.

आमीन यारब्बल आलमीन बिजाहि सय्यीदिल अम्बीयाइ वल मुरसलीन.

अहमद खानपूरी उफीय अन्हु.

४/जिल्हज. १४४१ हि.२६/जूलाइ २०२०